

ॐ १७ पञ्चवलयचर्चन यशोपवीतचारण विष्णुवोरो सिद्धिलक्ष्मीपूजा

ASHA ARCHIVES
3341



[illegible]

क्षेत्रं पूजयेत्तत्र तदा तामलुसदं संसृष्टयनतस्ते नमस्तु नू वनं नै वनं धीकृजं ॥ उक्ता नान्त
पादा रुसक्रमलकुजा वादन ग्वाभिलिप्ता वायुवा प्राजिना कृशं गिस्तकनलिश विन्दुता दाड्यकृश ॥
निर्यं झझा म्धना मरुपनमं कलां न यो मनुर्हि ४ पाया द्वा नवा सा सकन गुन वगारे नवध्वी
कृजं ॥ १ ॥ वक्ता ली कमल नू सो म्यवदनि माहृष्य बी ली लया की मा मी विपू दय्य ना न क वी वक्ता यथा
वेष्टु वी ॥ वा ना ही घन घा न घ घन म्खी ने डी ग्य व वक्ता यथा वाम्भु गल ना थरे न व गल न व क्रनु म माहृ
का ॥ मध्वि प्रासन ह्यमदमदित म्खा यक य द्या मदी फा वक्ता न्या यरूप पञ्च वदि ग प ल व यी प्रया दिक
॥ यक्ता कृविं ॥ का ॥ व स स स रु स स व कृ म् ए हू न कि सा कृ विं ॥ म्दिरुं दा ॥ क म व द स हि ता ॥ पा ड वा
विं ॥ व कृ ॥ १ ॥ ख म्भ म्ना मनु सिद्धिं प न प न वि न नै खे ग निं लो च न म्वा ॥ म्दु स म्दं वि कृ लं व लि प नि ग ज
यं कृ कृ नै सर्व विद्यां ॥ दि द्या यूर्क क वि नै नि वि न म्गु टि कां पा द्कां का म सिद्धिं सर्वान् न नान् नू द द कि

नलिपिभित्तवतारै नववत्तनूवका ॥ सामावकाविनयाकननवत्तमित्तमल्लमातमगममि विम्वशी वा न
नया पृथुतनऊद्यनामखलावत्तनमर ॥ दवीं गवमुत्तमरं वनवत्तनकसुमवर्धनकगलावसा मयी क
ङ्कि काख्यावित्तनडुनवसाहानदि योद्यमाद्यं ॥ तन्धूकयूतिसूयवाधिनयनीं सिहासनीं सूयनीं सध
वामिरुसर्वगकुरुनलीं शुक्लान्वनाहसिनीं ॥ यस्याद्यादधपातियद्विमल्लोवां कुरुलार्थपदो ता
म्वंदमहिषासूयप्रमथनीं शुभग्वनीं नोम्यदं ॥ काका १४ कसमीन १४ कयदहन ४ काय ४ कवि ४
रं ना कवका केजना र्दन ४ ककुजग ४ कन्द ४ कदवा सुना ४ ॥ कल्याकालरटीनट प्रमदित ४ थिसि
द्विया १४ ग्वन ४ कीजनाटक नायका विजत देवा महारै नव ४ ॥ महा काली महा मोद महा कषा क
नयनं ॥ कूलनूप महा कार्य कर्हिकाया लहसुर्क ॥ खकुरुठध नैधवदिभयकलनपरं नमस्क
मुमहा काल १४ कर्सी हानकावर्क ॥ मार्क १४ योवियदूपदगानूयहायावतानं वधयययवूर्धुकन

(म) वक्रवी वक्रकल्पः॥ देव्या कृदप्रमदितस नका यगर्व प्रका वा सा र्यद वा एव उल यगी प्रयस्य वसि
 कायाः॥ यादवी सधू के टर प्रमथनी या वलु मन्मुर्दिनी या सा घा सहिषा स नक्रय कवी या नक वीजा
 ययाः॥ या सा मुहु निमु कृदे ल दलनी यादवि द वा यया सा देवी समल कृद किल कुडै ग्य लुी जया वक्र
 उ॥ उत्कृष्टा मूज कर्त्तु का पात्रि गता श्री सिद्धि लक्ष्मी ४ पना कर्षू वरूटि कन्दू ध वला निः ४ लषपा पां पहा
 ॥ सै सा ना लू व दू ख य कृद रुनी निष्क मय न स र्व द्या श्री मलय मूखा मूजा दम पुठा प्र तस्ति ना घा रु मी
 या सा न का गि कृद ना कि गला ल वपा सा मार्क वक्रि पि पथ दल म थ सै स्म वि श्व द वि ह वि ष या र्थ वि लीन
 रा वा स्वा रा वला वि त प नी पु ल मा मि का ली ॥ उ न्दु खे व ग ना स न स्य द ध ती म थ ल रा ट पु र्ता सौ क्ती का कि
 म नू प्ते वि व नि व र्था र्थ ती स र्व ग ॥ पु षा सो वि पू ना हृ दि यति वि वा क्ती ॥ म ४ स दा रु कि ना विं या न
 ४ स रु सा ख दे मि रु नि न र्घी या ति र्मयी वा ग्मयी ॥ न म कृ द व द व सि सि द्धि लक्ष्मी महा ज स पु ल डि व म रा

[illegible]

[illegible]

न॥ ॥ नमो भूषणं गङ्गा पदं रङ्गवती चेतन्य नूपास्य को ह्यनेन कृत्वा न धातुं हि रुक्मा मनीषिण्यै ॥ राखे
नवपीठकं तदनुत्तरीया मिनीपीठकं त्र्यम्बकं तमनीच ॥ पद्मममलं मीपाउनि लीकूजा ॥ ॥ स्नानकाका
शीर्षपायसुखं कुर्यात् ॥ ॥ नैरादका कृतन ॥ ॐ ह्रीं नमो मनीष्यस्तु ॥ वलिसे दवस्तु ॥ नृपागदिया
स्नानवलिस्ततय नूका साहातनं ॥ ॐ किलि २ विश्वका कृत्वा यै ॐ नृपाय रुद्रस्तु ॥ ॥ ॐ नमो रङ्ग
वति हस्तकमलायै श्री हृदयाय पादकौ ॥ धनदवलि पविन नथि स्थै नृगल सथियै ॥ ॥ रुद्रमुलिना
लुग्यै ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कुरु ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कुरु ॥ सहानमदया विसृज्य नमो दाडा ॥ थवकासनदवदकायाडा
थवकतयलाडा ॥ ॥ नृपागदिया हापाया लेखदवस्तु वलिस्ततय ॥ ॐ नृपा ॥ ॥ नैरादका कृतन ॥ ॐ ह्रीं
का कदूयकं थवमि नहाय ॥ ॥ नैरादका कृतन ॥ ॐ ह्रीं नमो मनीष्यस्तु ॥ वलिसे दवस्तु ॥ नृपागदिया
स्नानवलिस्ततय नूका साहातनं ॥ ॐ किलि २ विश्वका कृत्वा यै ॐ नृपाय रुद्रस्तु ॥ ॥ ॐ नमो रङ्ग

जनयाप्रहीमयाग्र ३

अथ अक्षयपवित्रं नमः विधिः ॥ विमलं नमः चमय ॥ न्यासः ॥ अधो नमः ॥ कर्मांग ॥ वक्रांग ॥ अंग न्यास
याय ॥ अनां काया अक्षयहाया चिह्नं ॥ ॥ नमो विष्णवे विष्णो वा नमः मे गमं ॥ ॥ साधन ॥ चित्तं च नमः ॥ ईश्वर
नमः ॥ ईश्वरं वक्रं ॥ ईश्वरं दाय ॥ ईश्वरं मिवाय ॥ ईश्वरं लाय ॥ ईश्वरं द्रवताय ॥ ईश्वरं गदवताय ॥ ई
श्वरं दवताय ॥ ईश्वरं द्रवताय ॥ ईश्वरं पञ्चापतिदवताय ॥ ईश्वरं द्रवदवताय ॥ ईश्वरं सूर्यदवताय ॥
॥ ईश्वरं सर्वदवताय नमः ॥ जानाहि उरहियक ॥ ॥ निरवानमयगीम ॥ ईश्वरं मिखाता अग्रविष्णुं सुवेद्याय धीम
हं तन्नोः नमः पञ्चादया ॥ ॥ ईश्वरं नमः मयविष्णुं महादवाय धीमहि तन्नोः नमः पञ्चादया ॥ ॥ ईश्वरं कृष्णकाये वि
ष्णुं कूलदीपाय धीमहि तन्नोः नमः पञ्चादया ॥ ॥ ईश्वरं सिद्धिलक्ष्मि विष्णुं नवत्यादि धीमहि तन्नोः नमः
पञ्चादया ॥ ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥
मः ॥ ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥
पञ्चायार्थमिदं यज्ञपवित्रं ध्यायामि नमः ॥ ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥
अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥ अथार्चनं ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ २ ॐ वासुदेवस्य नमः ॥ शिवाय ॥ यक्षी कृत्य नमः ॥ सुख ॥ मह ॥ नाथ नमः ॥ इति ॥ २

[illegible]

॥ १ ॥

[illegible][illegible]

नन्दिहृदि रत्नाम्बु ॥ पार्वतीयस्पर्शदायि पूजा गृह्णोत्तमसदा ॥ नीलकण्ठपदीशोऽपविष्टः प्रतिमानसा ॥
भीमा पूजां हृत्पदहिवलुप्य च नमामुता ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ अथ ॥ दीप ॥ नैवेद्या ॥ अथ नमस्तुभ्यम् ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ नमस्तुभ्यम् ॥ दीप ॥ नैवेद्या ॥ अथ नमस्तुभ्यम् ॥

निरुचलिविविधविधि॥ ॥ लेखनमेतत्तदयक॥ लेखनउद्धयिक॥ ॐ नमो नमः॥ ॐ मह्यैरा॥ ॐ निरुचैरा॥ ॥ अथपंच
लिविधयः॥ ॥ ॐ पृथिवी नमः॥ ॐ पृथिवी नमः॥ ॐ पुत्रायतयरा॥ ॐ नमः॥ ॐ प्रियैरा॥ ॥ हतवसिविधयः॥
ॐ हतवसि स्वाहा॥ ॐ उव नपतय स्वाहा॥ ॐ हताना पतय स्वाहा॥ ॐ पितृपतय स्वाहा॥ ॐ वसिपतय स्वाहा॥ हत
यस्तकालाय हतदिवाननी अच॥ पाता हत न वासिना न नमः॥ ॐ गीवा हत पा॥ नमः॥ अत्र जल लय॥ ॐ स्वाहा॥
लेखनउद्धयिका वता न॥ ॐ नमः॥ नति उत पृथु हाया विजयता मुख॥ लेखन हत वषट्कार नमः॥ अति नमः॥ त स्वाहा॥
नान॥ ॥ अत्रपासन॥ ॐ पासाय स्वाहा॥ अनामिकी गुह्ये॥ ॥ ॐ वा नाय स्वाहा॥ अनामिकी गुह्ये॥ ॥ ॐ अपानाय स्वाहा॥ म
धमा गुह्ये॥ ॥ ॐ उदानाय स्वाहा॥ अनामिकी गुह्ये॥ ॥ ॐ समानाय स्वाहा॥ मध्या गुह्ये॥ पंचमः॥ ॥ पूननाचमने॥
ॐ अमना विधनमसि स्वाहा॥ नान॥ ॥ अथ हताना॥ अथ कवससु वसि नितय अचमन॥ ॥

१ यस्मिन्मयाध्यान॥ जे ॐ वृषरुसंति गंदवखवर्धुनूय (महिनी॥ प्रकव कुं प्रिन प्रसनु आ द
अध्यानिनी॥ ७ म दं यन शुं वाने ख पु मं कृ अ व क क॥ अं खं वी न वा अ रं व न दा व न द कि (६
॥ वा मे ख द्वां ग भू नं न व नु रु ल क या अ क॥ य ध क या ल वे न रं नू रु या रु स ना अ क॥ य द न व कि
गं आ नू वा सी नू वा न द व गी॥ प्र क व कुं प्रि ने श रं नू र धा व धु व धि ना॥ दि उ आ न न दा द क्षि
रु ल्म रु स म य स॥ ना ना रु न ध (म रा दा स ल द्वा व ल द्वा॥ रुं न वी न न्द नू यी सं अं अं अं अं अं
की लि नं॥ प्र व धा ला म हा द वं दि प्र ति दि नि मा न वा॥ ॐ नि ध्या ना॥ ॥

१ॐ नमः श्रीसिद्धिलक्ष्मी देव्याये ॥ आत्मा ३ ॥ अखं श्रेष्ठमहलाकात्रगुरुनमस्तान्कुर्यात् ॥ ३ ॥
 श्रीश्रीश्रृंगपाशायायादकां ॥ श्रीश्रीआत्मासनायायादकां ॥ खं सकलमप्रमथनिश्रुताय
 रुट ॥ खं ॐ हं रुटवक्रयं जने हं रुटखादा ॥ अखं जलमकलं कलमजलं श्रीहं रुटखादा ॥ आद्याया
 मसंवि न्यासा ॥ अखं सकलमप्रमथनिश्रुताय रुट ॥ ४ ॥ खं यत्रमदंतिनीश्रृंगुष्टायनमश ॥ खं
 निर्वाहमागर्जदवो नृजन्मायेस्वाहा ॥ खं विषमायवयुंममनि मध्यमायेवायट ॥ खं सकलदुनि
 नाविष्टकेशदलनिश्रुतांमिकायह ॥ खं सर्वायदांलाधिननदिकंश्रीकायवमट ॥ खं सकलमप्र
 प्रमथनिश्रुताय रुट ॥ खं नमः सर्वसिद्धिशागिनीश्रीकुर्ववकुनाथयादकां ॥ खं नमः सर्व
 सिद्धिसालक्ष्म्यपूर्ववक्रनाथयादकां ॥ खं नमोनिश्यादिगानन्दनन्दिनाथदक्षिणनाथवकु
 नाथयादकां ॥ खं सकलकलत्रकनाथिकाथेडुववकुनाथयादकां ॥ खं हरावस्थेवधु
 कायालिन्येयस्मिन्मवकुनाथयादकां ॥ खं नमः सर्वसिद्धिशागिनीश्रीकुर्ववकुनाथयाद
 कां ॥ ०० निवकुन्यासः ॥ अखं यत्रमदंतिनीसर्वहृदयनाथयादकां ॥ खं निर्वाहमागर्जद

वीरु फिलिनीनाथपादका॥ खूं निममाययवयसमनिमनादिबोधनित्वाद्यवोषट॥ खूं सक
लद्विनाविष्टक्रेमदलनित्वा॥ नंगकवचोयहं॥ खूं सचायदांहीधिननहिश्रुलफम॥ एकथ
नेग्रशायवसट॥ खूं सकलमक्रयथमंनिश्रुताय॥ रुठ॥ ॐ ह्यंगन्यासशा॥ नंक्रमध्या॥ शं दद
श॥ आं नारा॥ ॐ ति॥ दहं न्यास॥ ॐ मुख॥ श्री वामनाभयट॥ दूंदेदिदताभयट॥ दां वामनेग्र
॥ दूंदेदेदनेग्र॥ दां वामक(र्ध)॥ कोददिदक(र्ध)॥ नं लिङ्ग॥ मंगुद॥ ॐ तिमूलन्यासशा॥ श्री धाः
कुलयाशसनायपादका॥ श्री श्रीं कुलयाग्रहदायकायपादका॥ सउंगानेग्रुनं॥ श्री वा
रुनादिधनमद्राददसंश॥ गाय॥ श्री नसर्वद्रव्यश्रुतादिप्रोदद्यो॥ मंमयाशसनायपादका
॥ नंगाराउमन्यादि॥ श्री श्रीं कुलयाग्रहदायकायपादका॥ सउंगानेग्रुनं॥ श्री वा
रुनादिधनमद्राददसंश॥ गाय॥ श्री नसर्वद्रव्यश्रुतादिप्रोदद्यो॥ श्रययाशसनायपादका॥
ने श्री श्रीं संपूजा नन्दसोकरेव॥ नवायवोषट॥ ॥ श्री श्रीं खूं स्वः साः साः यवादवी अमृतम
वमवासा॥ दूंदेद्वयसोधनं॥ ॐ श्रीं हूं हूं हूं श्रीं श्रीं नमशा॥ यथां जलि॥ ॥ सउंगानेग्रुनं॥

नामालासुष्टकं अगम ॥ उक्तासा कसया ॥ गनतालयकुलयवर्त्ता ॥ कति कीय कति कृपे कति च
दरने वला ॥ कति कृते कति यालो ॥ स्त्रनर्त वायवर्त्ता ॥ गगनासा रुद्र दोय का मय गान्द्र विरु
वित्त या म् ॥ ५ ॥ अधवा दवी वन दा रुय या छिनी ॥ सय रुसे धृ तं ख नृ प्रली कां दी रु का र्व ॥ नाम स
दा न म ल्क ग्रं द दि (घ) ल म ल म ॥ अ य न क न्द वा नो द्रं द य या म व यू नि तं ॥ स य रु से स क र्म व
मु छु सी धि न सा रु क ॥ वा म रु क ल र्म दि य म हा व ल य दी य क ॥ प्र या य ह्म दि ना द वी न नु ना जी य
द म ग ॥ न का सा ने क र्म द न दि य वा य य व स्मि ना ॥ प्र य ह्मि रा म हा द वी सि छि ल की रु य य दी ॥ ००
ति ध्या न य र्थ या द क ॥ ॥ प्र या ३ ॥ ॥ ॥ ॐ क्रो हं हं हं हं क्रो नं म श ॥ ३ ॥ म य श्री पू ज य ॥ ॥ ॥ सि छि
ल की वि न्म ह न व ला दि धी म ह न नी ल की प्र ती द या न ॥ व लि ॥ मा ला म रु ॥ ॐ न म ४ स ॥ च सि
छि श्री गि गी नी ली न म ४ स ॥ च सि छि सा रु ली न मा नि ली दि ना न न्द न न्दि ना य स क ल क ल व क ना
यि का र्थ रु ग व ली व छु का या लि न्म ग य ॥ ॐ क्रो हं हं हं हं क्रो नं म ४ ॐ य व म ह सि नी नि वी य
मा र्ग द वि म मा य प्र व प्र म नि स क ल द रि ना नि छि ह्म द ल नी स य य द न्नी दि न वि स

क्रो ॥ नलि ॥ ५

[illegible]

ऊरुनीयादको३॥वलि॥खूंस्मूंमंरुनी३॥वलि॥खूंस्मूंमादनी॥वलि॥खूंस्मूंश्राकस्यधी३॥व
लि॥ ॥अथअष्टदलयपद्मा॥ ॥वेदंसासनाय३॥ ॥वृषासनाय३॥ ॥मयूनासनाय३॥
गन्धुनासनाय३॥महिषासनाय३॥गजासनाय३॥प्रभासनाय३॥सिंहासनाय३॥ ॥खूंस्मूं
क्रास्यधीद्वीजसिनाङ्गुनवसहिनाययादकी॥वलि॥खूंस्मूंकांमादस्वनीद्वीजनरुनव३सहि
नाय३॥वलि॥खूंस्मूंत्रंकीमादीद्वीजधुरुनवसहिनाय३॥वलि॥खूंस्मूंटंवेसुवीद्वीकीठरु
नवसहिनाय३॥वलि॥खूंस्मूंनंवानादीद्वीजउमरुनवसहिनाय३॥वलि॥खूंस्मूंयं०
द्वास्यधीद्वीकयालीसरुनवसहिनाय३॥वलि॥खूंस्मूंयंनमधुद्वीकीमहारुनवसहि
नाय३॥वलि॥खूंस्मूंभंमहालकीद्वीसंहानरुनवसहिनाययादकी३॥वलि॥ब्रह्मादित्र
यप्रयुक्तोद्वी००॥भीमनाकंयुक्तय॥ ॥खूंस्मूंमिनाद्वीजस्वायादकी॥खूंस्मूंरुवावतिद्वीज
स्वायादकी॥खूंस्मूंमायाद्वीजस्वायादकी॥खूंस्मूंरुद्राद्वीजस्वायादकी॥खूंस्मूंकिंदिद्वीज
स्वायादकी॥ ३॥खूंस्मूंविमलाद्वीजस्वायादकी॥खूंस्मूंसमजिह्वाद्वीजस्वायादकी॥खूंस्मूंत्व

कर्महीदवी नम्राया दकां॥ खं घटा दवी दवी नम्राया दकां॥ खं श्रोत्रमागमी दवी नम्राया द
कां॥ खं किंकिहीदवी नम्राया दकां॥ खं काकिहीदवी नम्राया दकां॥ धनं वलि कातिश॥
ॐ ति॥ पूर्वोदिता दमदले पूजयेता॥ ॥ द्विवरु॥ खं आदिदेवकायनमः॥ खं आध्यात्मिका
यनमः॥ खं आदिरुतिकायनमः॥ खं न॥ ॥ खं शुभं जं ग कि॥ खं या दकां॥ ॥ खं नमो नमो
कि॥ खं या दकां॥ खं नमो लाला कि॥ खं ॥ खं नमो कांका कि॥ खं ॥ खं नमो सां ॥ खं नमो सां
॥ खं ॥ खं नमो हां हां ॥ खं नमो कि॥ खं ॥ ॐ ति॥ खं नमो वरु कि॥ खं सटको॥ ॥ खं पूर्वोदिता दमदले
॥ ॥ खं नमो कोदा दकां॥ खं पूर्वोदिता गिनिती ॥ ॥ खं नमो ॥ खं नमो कांका मन्त्रययी ॥ ॥ खं नमो ॥
॥ ॥ खं नमो ॥ खं नमो जालधनं नयी ॥ ॥ खं नमो ॥ खं नमो जालधनं नयी ॥ ॥ खं नमो ॥ खं नमो जालधनं नयी
दकां॥ ॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ ॐ ति॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ खं नमो वरु लि॥
नन्दमकिरु ववानन्दवी नमिदमः॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ खं नमो वरु लि॥
नवानन्दवी महाविश्वाराज्यवी ॥ ॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ खं नमो वरु लि॥ ॥ खं नमो वरु लि॥

[illegible]

हं न त्रि गो स गो यंत्रे ॥ नैवेद्य गो स गो यंत्रे ॥

भिनम॥ वलि॥ ॥ नैकी सो श्री सूर्य चक्र को जाल न्यत्रयी ॥ १० ॥ ठिसना आत्म के श्री चक्र ध्वनी दवी
 श्री विष्णु तम भक्ति याद का श्री पूज्या मि॥ वलि॥ ॥ नैकी सो श्री सोम चक्र पूर्व मित्रिग क्रम श्री
 मशी सनात्म के श्री रुग्मा श्री लिनी दवी श्री वक्रात्म भक्ति श्री याद का पूज्या मि॥ वलि॥ ॥
 नैकी सो श्री वक्र चक्र श्री शो नयी ॥ १० ॥ नैर्याना आत्म के महा प्रिय न सन्दरी दवी यन
 भक्ति सहिता य श्री याद का पूज्या मि॥ ३॥ न न वलि गुरु साहा ॥
 हां प्रदी को न म॥ ३॥ वलि॥ ॥ उं रु सिद्धि कया ली श्री की हरी श्री न म॥ ३॥
 लि॥ ३॥ महा मिवा सनाथ श्री नैक यथा सनाथ श्री नैकी सो श्री श्री श्री
 श्री ठिसानयी ॥ १० ॥ श्री नय्या भनात्म के श्री महा प्रिय न सन्दरी श्री श्री श्री
 कात्म भक्ति श्री याद का पूज्या मि॥ ३॥ वलि॥ ॥ नैथ वलि म॥ श्री श्री श्री
 नै॥ ॥ रवे दल
 नाम स॥ २॥ श्री

सहिताश्र

三

[illegible]

क० द० द० ॐ क० न० क० मि० भ० उ० नी० या० त्म० क० शू० न्या० नि० भू० न्या० नि० चो० द० नि० क० ल० न० न० द० श्री० या० द० को० ॥ व
लि० ॥ नि० त० ॐ न० क० म० लो० स० मा० य० या० द० को० ॥ नि० त० ॐ ना० य० वि० स० ह० नि० ना० का० य० श्री० म० ह० त० नी० ॐ न्या० प्र०
शो० द० या० हा० ॥ व० लि० ॥ ध० नु० शो० नि० क्षो० स्वे० त० नी० म० द्रा० द० द० र्श० य० त० ॥ व० क० न० न्ध० शि० य० को० ॥ ॥ सि० द्वि० ल० क्षो०
या० क० ल० को० ॥ ॥ त्र० श्री० स्व० सि० श्रु० द्वि० ल० क्षो० स्वा० हा० ॥ ॥ गु० र्क० का० लि० कु० ल० को० ॥ ॥ उ० द० ख० वी० लो० क्षो०
रु० ग० व० नि० गु० र्क० का० ली० स्वा० हा० ॥ ॥ प्रि० य० न० कु० ल० को० ॥ ॥ त्र० श्री० श्री० वी० श्री० प्रि० य० न० श्री०
रु० ग० व० नि० स्वा० हा० ॥ ॥ ग० लो० के० ल० को० ॥ ॥ उ० श्री० ह० ॥ ॥

१ श्री ३ सु रु वे न मः ॥ ॥ अथ शत्रु संधा विधिः ॥ ॥ त्रितले ना न मः ॥ ॥ खे स्वाहा ॥ पु १२ रु १६ रे १० ॥ इति प्राणाश्यासः ॥ अथ कलांगन्यासः ॥
खे सकल शत्रु प्रमथ निश्चायकः ॥ ॥ ॥ खे परमहंसिनी अमुं ॥ ॥ आ नमः ॥ ॥ खे निर्वाण मार्ग देवी तर्जनी भ्यां स्वाहा ॥ ॥ खे विषमो
पक्ष प्रसमनी मध्यमा भ्यां वौषट् ॥ ॥ खे सकल दुहितारिष्ट क्लेश दल निश्चिना मित्रा भ्यां द्रौं ॥ ॥ खे सर्वापदां भो धितर नि क नि ष का
आं नमः ॥ ॥ खे सकल शत्रु प्रमथ निष्करतल पृष्ठ भां कट् ॥ ॥ इति कर न्यासः ॥ ॥ खे ॐ नमः सर्व सिद्धि योगिनी भ्यो दुर्ध्वं वक्राय नमः
॥ ॥ खे नमः सर्व सिद्धि मातृ भ्यो पूर्व वक्राय नमः ॥ ॥ खे नमो नित्योदितानन्द नन्दितायै दक्षिण वक्राय नमः ॥ ॥ खे सकल कुल वक्र नाः
शिकायै उत्तर वक्राय नमः ॥ ॥ खे भगवत्यै नरुणाया लिन्यै पश्चिम वक्राय नमः ॥ ॥ खे ॐ नमः सर्व सिद्धि योगिनी भ्यो दुर्ध्वं वक्राय न
मः ॥ इति क्रान्यासः ॥ ॥ खे परमहंसिनी सर्वतो ता ह दयाय नमः ॥ ॥ खे निर्वाण मार्ग देवी तृप्ति शिरसे स्वाहा ॥ ॥ खे विषमो पक्ष
प्रसम निश्चिनादि नो भ शिखायै वौषट् ॥ ॥ खे सकल दुहितारिष्ट क्लेश दल निस्तत्र क वक्राय द्रौं ॥ ॥ खे सर्वापदां भो धितर नि ष क लु
प्तशः ॥ ॥ नैत्र त्रयाय वषट् ॥ ॥ खे सकल शत्रु प्रमथ निश्चायकः ॥ ॥ इत्यंगन्यासः ॥ ॥ तं ॥ प्र म ध्ये ॥ मं ॥ ह द म ॥ आं ॥ ना भौ ॥ इति देहः
न्यासः ॥ ॥ ॐ ॥ सुखे ॥ ह्रीं ॥ वामना सां पुटे ॥ हूं ॥ दक्षिण ना सां पुटे ॥ हूं ॥ वामने त्रे ॥ प्रे ॥ दक्षिण ने त्रे ॥ वौं ॥ वाम कर्णी ॥ क्रौं ॥ दक्षि
कर्णी ॥ नां ॥ लिं ॥ मं ॥ यु डे ॥ इति नवकार न्यासः ॥ ॥ आ नमः ॥ ॥ खे महा तेजो मयी लक्ष्मी रश्मि को द्या यु त प्र भां ॥ पंच वक्रां दश

सुजां त्रिपञ्चनयनोच्चलां ॥ श्वेतवर्णमहादीप्तां महामहाप्रेतोपरिस्थितां ॥ मातृकाष्टकमध्ये तु सिद्धियोगीनी वन्दिता ॥ कारितास्य
ह्येतिहा नान्वालापुष्टं कृतं जगत् ॥ उक्ता सोऽस्य योगेन बालसंकुलपर्वतान् ॥ क्वचिद्वेदे क्वचित्कुर्येकचित्संहरते वलात् ॥ क्व
चित्सृजेत् क्वचित्पालयेत् क्वचिद्वैद्यप्रवर्तते ॥ गोनाशाभरणैर्युक्ता सुहृन्नुविभूषिता ॥ पाशाकुशाभरीदेवी वरदा भयघातिनी ॥ स
व्यदत्ते धृतं त्वं नैलोक्य सोभकारिणी ॥ वामे त्वद्वाङ्मस्युग्रं दक्षिणे शूलमुत्तमं ॥ अघरे कन्दरौद्राश्च जगन्नाथप्रहृतिं ॥ सव्यद
हस्ते सकेशश्चैव सुणुतो नितसाङ्गं ॥ वामे तु कलशं दिव्यं महाहस्तैश्च प्रहृतिं ॥ एषा प्रत्यंगिरा देवी उन्मना व्योमदेहया ॥ एका साने
कभेदे न निश्चयाय्यवस्थिता ॥ प्रत्यङ्गिरा महादेवी सिद्धिलक्ष्मी जयप्रदा ॥ इति ध्यानं ॥ शीतलजलधूपदीपनैः कथं न तु सत्कारः ॥
त्यैः सकलशत्रुघ्नमथनी अस्त्रायेकदं ॥ लखनहाय ॥ मूलमन्त्रेन सोभनभाङ्गा ॥ द्रव्यगुणं ॥ फट्तालं ॥ वामे नुमुद्रां दक्षिणं ॥ शीतल
जलनिवेदनं ॥ त्यैः सलैरं पावनदेवी शीतलं सुमनोहरं ॥ तुभ्यं नमो दितभक्ता गृहानपरमेष्ठिनी ॥ धूपं ॥ वनस्पतिरसोपत्रनागधा
मनोहरं ॥ आघ्राण सर्वदेवानां भूयो यत्प्रतिगृह्यतां ॥ दीप्यमाना ॥ धूपं ॥ हारं ॥ दीपं ॥ सुप्रकाशं महातेजसं तत्त्वमिलासुहा ॥ सवासा
भ्यंतरजोतिर्दीपो यत्प्रतिगृह्यतां ॥ नैवेद्यं ॥ नैवेद्यमुत्तमं देवी नानाद्रव्यसमन्वितं ॥ मयानि व्यसंभक्त्या नैवेद्यं यत्प्रतिगृह्यतां ॥
पुनरावमनीयं समर्थमिदं नमः ॥ तामूलं ॥ तमालदरदक्युर्युगभागसमन्वितं ॥ ससौमिकसुगन्धतामूलं यत्प्रतिगृह्यतां ॥

[illegible]





[illegible]

५५५

[illegible]

वैशाख शुक्ल

[illegible]

१॥ जया॥ सहस्रं सहस्रं ॥ १॥

नमो नवमविभूति कुन्दश्री महासिद्धिलक्ष्मी गुफगुफयवता धुवीर्ज साहागकि ४० अर्ध कीलकी ममसर्वा
 र्थसिद्धयुक्तय विनियोगा ॥ इति वद्धाङ्गुलि ॥ ॐ एकदचलुग्यनते नवमविनय नमः ॥ निवसि ॥ ॐ उष्टि कुन्दश
 नमः ॥ मुख ॥ ॐ महासिद्धिलक्ष्मी गुफगुफयवताये नमः ॥ हृदि ॥ ॐ वीजाये नमः ॥ नातो ॥ ॐ साहाग
 कय नमः ॥ मूलाक्ष ॥ ॐ अर्ध कीलकाय नमः ॥ पादनिजमूल ॥ ॐ ममसर्वा र्थसिद्धि र्थय विनियोगा सिद्ध
 सिपादादिगपिकं नमः ॥ ॐ नमः ॐ सुं ॐ नैगुहाय नमः ॐ सुं ॐ नैर्जनीयो ॥ ॐ सुं ॐ मयमायाया ॐ सुं ॐ ननु
 म्मिकायां ॥ ॐ सुं ॐ कनिष्ठायां ॥ ॐ सुं ॐ कनननपुहायां नमः ॥ ॐ नैर्जनाय ॥ ॐ सुं ॐ रुदयाय नमः ॐ सुं ॐ
 ॐ निजसाहा ॥ ॐ सुं ॐ निखाये वोषट् ॥ ॐ सुं ॐ कवचाय ॐ सुं ॐ नैर्जनाय वषट् ॥ ॐ सुं ॐ नैर्जनाय रुट् ॥
 ॥ ॐ नैर्जनाय ॥ ततायै महादवी सिद्धिलक्ष्मी रुदम्वज ॥ कनाल वदनां घातां निवा नृपां सितदितां ॥ ननवर्मय
 जीक्षनां नाजालु कृतमखली ॥ मधुमाला पत्रीताङ्गी तदकवचाकितां ॥ द्रुपद्या नैर्जनाय मूर्ध्नीयामां ललजिह्वां एयक
 नीं ॥ निमूर्ध्नीं गजगद्गुली वदनां नागकुली ॥ स्वर्जकरुणकिं मुडो मवयूगमकथापनं ॥ महा मधुपानपायं ववैवाहय

महातमा मेविल सीतादि ॥ ३

म व या द व ती छ उ ऊ द वी नी ना न त य या थ ना ॥ ऊ टि ला न क व मु झी कूल थान य ना य धी ॥ तथा ह त र न व न
साम न स्यं प की र्ति नी ॥ न की रा वे न स र्व ग प न व क्ख नू चि वी ॥ य कूल सि ह र त नी न कू षा किं स म न्चि तां ॥ क व ली थ
न मा ये न सा ध क ष सि द्धि रा गू वे गा न्ति थान्ता ॥ ॥ त न ४ पू ऊ नी ॥ कुं पी म हा सि द्धि ल श्री गु फ गु फ व वी द व ता ये न म था ३
॥ ॥ अ थ मा ने सा प वा न पू र्ण ता ॥ ॥ कुं लं पृ ष्ठी त ल्यं ग र्भं स म र्प या मि न म था ॥ क नि र्वा गु षो धि या डी का य ला व ॥ ॥ कुं वं श
प त लं पृ ष्ठी स म र्प या मि न म था ॥ त र्जु न्या इ षो ॥ ॥ कुं नं त उ त रं वृ षं स म र्प या मि न म था ॥ म थ मा इ षो ॥ कुं यं वा य त ल
दी पं स म र्प या मि न म था ॥ अ ना चि का इ षो ॥ ॥ कुं हं आ का ग त ल ने वं यं स म र्प या मि न म था ॥ स र्वा इ लो ॥ ॥ उं या नि मू डा
व द्वा ता मू लं स म र्प या मि न म था ॥ ॥ मू ल न य इ लि था ॥ ॥ कुं पी म हा सि द्धि ल श्री गु फ गु फ व वी द व ता ये न म था ३ ॥ ॥ जा या
कुं ला हा ॥ १ ॥ ॥ ज य स म र्प ता ॥ कुं गु का दि गु क्क ण मू लं गु हा म म ल र्ता र्प ॥ सि द्धि र्क व उ म द वि ल्प य सा दा न म र्थ
त्रि ॥ न्दं ज यं गु हा ल ला हा ॥ ॥ त न य म म् ॥ सि द्धि ल श्री सि द्धि वि य स र्व सि द्धि वि ह्म ल ॥ न न र्हा न्द हि म मा न व द्म र्मा

[illegible]

रूपोदयार्थक्रमस्वम् ॥ श्रुतिरुचिकप्रार्थनायावावहाय ॥ ॥

६१५

[illegible]

ज्ञानतातादाववा रुध कस्येय ॥ पथथउमनीनयाषट् वक्या रुधस्येय ॥ ॥ थवया हायमन ऊडा नेमयमास मपि
थावान ॥ साह नउतिस्त्रियलिंण ॥ पनसग दया साह नस ३ नपा ला हातस १० उतिपासि स कृपा कृपा १ रुनेनया लातस ३ म
उरु कूरयायज ॥ ॥ वावये ॥ मंग ॥ ॐ क्ली कामदवाय सर्वजनभाहनाय साहा ॥ ॥ नृथ हानविधि ॥ रुद्रपायो म
खपकासन ॥ ॥ जितलन न्रावम ॥ ॐ द्वां न्रात्मतलाय साहा ॥ ॐ द्वां विद्यातलाय साहा ॥ ॐ द्वां भिवतलाय सा
हा ॥ ३ ॥ मिखावधना ॐ मिखानाथ यविद्यरुत्से कृन्दा यधीमह नना नृदपचादयात् ॥ द्वां नृद्यानाय मिखा
वधनेनमः ॥ जानासंखनपिउधिया डागमचि क्रिया ॥ ॐ द्वां नृद्यानाय यद्वापवीने व ध्रामि साहा ॥ ॥ नृथया
सा ॐ द्वां नृमुय रुद्रा ॐ द्वां नृगुष्टाया नमः ॐ द्वां तर्ङ्गीनीया साहा ॥ ॐ द्वां मध्यामाया वधट ॥ ॐ द्वां नृनामिका
या द्वां ॥ ॐ द्वां कनिकिकाया वीधट ॥ ॐ द्वां कनतलपृष्टाया नमः ॥ ॐ द्वां कना न्यास ॥ ॥ नृथ नृद्वनास ॥
ॐ द्वां रुदयाय नमः ॥ ॐ द्वां निनस साहा ॥ ॐ द्वां मिखाये वधट ॥ ॐ द्वां कववाय द्वां ॥ ॐ द्वां नृगुयाय वीधट ॥

[illegible]

नवट् ॥ लिंक वचाय दूँ ॥ वॉन कुतयाय वीषट् ॥ यं नमुाय दूँ ॥ ३॥ ॥ संकल्प ॥ मम सकल पाप कृपया नाम वृत्ति कृपिदार्थ
विस्तृति धाम महेक विधि ॥ ॥ दया सविहृति तया वानाडा पंचकालं याय दथ स हौं वीज वायाडा क कृपम कानता कपया
उमूलमैग साध लय ॥ ॥ हं नमः मिवाय ॥ हं ॥ अग्नि विहृति हस्म जल निहृति हस्म कल निहृति हस्म वायु विहृति हस्म आम रुति ह
स्म सर्व हस्म यनम था गम यदी ॥ ॥ हं तत् नूषाय विद्वद्म ह्म दवाय भीम हित नानुद उवा दयात् ॥ ॥ वा ॥ प्रासात सति
पुगु धान लमूलमैगन ॥ मू० श्रीमनाय ॥ नि नसि ॥ मूम हाद काय रल लाट ॥ मूप सुप तथ ॥ हृदि ॥ मू० माय नमः ॥ क ॥
मू० अय ॥ ना हो ॥ मू० वी न ह्म डाय ॥ दा ॥ कृप्य चमलि वल्ह ॥ मू० ग न हाय ॥ क कृदि ॥ मू० नू डाय ॥ पृष्ठ वं ॥ मू० ह वाय ॥
जान पाद ॥ मू० सर्वा यनमः ॥ सर्वा ॥ ला दा त सिया डा कया लम ह्म य ॥ ॥ कृप ॥ मू० न ॥ ॥ हं नमः मिवाय गम काय कान
गज य ह्म व ॥ नि व दया मिवा ला नं लंग ति य नम ग्व नथा मू० व वा ॥ ॥ न्या स लि काय ॥ सं हा व मू० दया वि स कृने ॥ कृम स्व म
हू दे वा ॥ पि ना च म्मा ॥ ॥ नृति विहृति धाम ल विधि ॥ ॥ अथ सर्व ॥ लि त ल ना नम ॥ ॥ ना सा प त दय नृ ग दय ॥ ॥ ॥

[illegible]

॥ ततासाधुदवाचन ॥ ॥ विनायका ॥ ॐ हृदयमाय रुद्र ॥ ॐ हं नमः ह्यस्तु नमः ॥ ह्रीं तर्कनीत्यां स्वाहा ॥ ह्रीं मध्यामाया वीर
ह्रीं हं कवचाय ह्रीं ह्रीं कमिषाय वषट् ॥ हृदय कनकनयनयुक्ताया नमः ॥ ॐ हं हृदयाय नमः ॥ ह्रीं निजसखा ह्रीं नि
खाय वीर ॥ ह्रीं कवचाय ह्रीं ह्रीं नयनयाय वषट् ॥ हृदयमाय रुद्र ॥ ३ ॥ ॐ हं पद्मासनाय नमः ॥ ह्रीं कृष्णासनाय नमः
गुणायुक्ता ॥ ॐ हं ह्रीं सदानिवाय नमः ॥ ३ ॥ ह्रीं विशादहाय नमः ॥ ह्रीं ह्रीं सदानिवाय चन्दनाकतपस्थं नमः ॥ वृवदी
येन सः हृदये वशी नमः ॥ ३ ॥ ॐ हं साहा ॥ १० ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं वार्चना ॥ ॥ नृधनयदवाचन ॥ ॥ विनायका ॥ ॐ हृ
दयाननकथं नृमाय रुद्र ॥ ४ ॥ ॐ हं सः सर्वज्ञाय नमः ॥ ह्रीं ह्रीं माधियतय तर्कनीत्यां ॥ ३ ॥ ह्रीं ननादि
वाधमध्यमाया ॥ ३ ॥ ह्रीं ह्रीं स्वतनु नृनामिकाया ॥ ३ ॥ ह्रीं ह्रीं नृत्पुमकाय कनिष्ठिकायां ॥ ३ ॥ ह्रीं ह्रीं हृदय ननकाय कन
नयनयुक्तायां ॥ ॥ नृगन्यासा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सर्वज्ञाय रुद्रयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं माधियतये निजसखा ह्रीं ह्रीं
ॐ नृनादिवीरानिखार्यो वीर ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स्वतनु कवचाय ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं नृत्पुमकाय नयनयाय वषट् ॥ ॐ ह्रीं

[illegible]

२. ॐ कौपमासनाय ॥
३. ॐ कौपमासनाय ॥

[illegible]

कर्मनिखननिवगिनीलनदावाग्निमाला नगंघ्रिं ध्यायता वंशितिवधि वचिरिन्ध्रिद्रुतकालनद्यथादंष्ट्रा चंद्रय
राशिष्यकटितसृष्टकालपातालमूलं गङ्गा चक्रसुवर्गं विदग्धराय रुचंरुं लघुचन्द्रकिरा च॥ ७॥ अग्रे नगनन्द
वार्जनविष्वतस्सर्वपनिपूर्वममुष ॥ आचम्या ॥ न्यासलिकाया ॥ ॥ तर्ङ्गनी नन्दवधिया उानुगलसधिया ॥ सीतसम
जानस्यस्मानयाहावदवधवकइकायक्राससनाइहावइकाय ॥ ॥ ॐ नमस्तु नृप कृष्णाय न ॥ कंग्वननाउहावद
कतिन ॥ ॥ निम्नां ल्य पूजा ॥ ॐ गिवनिर्मा ल्य चन्दना ध्यायमाकि सुहृताय नमः ॥ ॥ नासिध ॥ ॥ तिलिगमर्चनविधि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वास्तुपूजाय २

थर्मद्वयजुआतालय ४

त्वनाचम्या॥ स्वप्नचन्दनतिङ्गुलत्रकृतजाकावा॥ श्रीगुर्वनमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु॥ ॥ नैर्दोषी ह्युहो॥ नखदुमधु
 लाकारं शार्क्यं नच नाचनं॥ तस्युदेदमिर्तेयं न तस्मै श्रीगुर्वनमस्तु॥ गुर्वनमस्तु गुर्वनमस्तु गुर्वनमस्तु
 महेश्वर॥ गुर्वनमस्तु गुर्वनमस्तु गुर्वनमस्तु॥ श्रीपवनमस्तु गुर्वनमस्तु॥ श्रीपवनमस्तु गुर्वनमस्तु
 नमस्तु॥ श्रीपवनमस्तु गुर्वनमस्तु॥ नृद्ययागस्तनायपादुका॥ नैर्दोषी ह्युहो॥ पद्मा
 सनायपादुका॥ पद्मासनायपादुका॥ जलपासनायपादुका॥ ॥ नैर्दोषी ह्युहो॥ विद्यकादनायपादुका
 नृद्ययागस्तनायपादुका॥ ॥ नैर्दोषी ह्युहो॥ वज्रपादुका॥ ॥ नैर्दोषी ह्युहो॥ मखसुतिका लामा नलामा
 लदयका॥ ॥ नैर्दोषी ह्युहो॥ वलमूकलकलमवलङ्गी ह्युहो॥ धनदगवधिया॥ ॥ नृद्ययागस्तनायपादुका
 नैर्दोषी ह्युहो॥ विद्यकादनायपादुका॥ नृद्ययागस्तनायपादुका॥ ॥ नैर्दोषी ह्युहो॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 नमस्तु॥ नृद्ययागस्तनायपादुका॥ नैर्दोषी ह्युहो॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु

[illegible]

हृत् वानन्दधी ५

नवलिखितमालः

स्वडाकिस्हिनाय ३

नवात्मा ३३

नकाययादकी॥ वलि॥ ॥ जयदासनायपाइकी॥ उंजननासनायपाइकी॥ उंज दू॥ नानन्दमाकिहेनवानन्द
वाजाधियमयमुँगी॥ यीगुन्मलुलहटाविकायपाइकी॥ पूजयामि॥ ३॥ वलि॥ या मुँगी निमदादर्गयतू॥ ॥ उंज
सासनाय३॥ ॥ उंज दू॥ यीगुन्मलुलहटाविकायपाइकी॥ वलि॥ ॥ उंज जयदासनाय३॥ उंज मुँगी
गाडोषधीलहाविकायपाइ ३॥ वलि॥ ॥ उंज कषासनायपाइकी॥ उंज सैहासय३॥ उंज दू॥ यीमानन्द ३
माकिहेनवानन्द वाजाधियम यमुँगी श्रीकृष्णार्थस्वर्गकि सहिताय पाइकी॥ व ३॥ लि॥ ॥ उंज ह
सासनायपाइकी॥ उंज कषासनाय ३॥ उंज मयूनासनाय३॥ उंज गजूनासनाय३॥ उंज महिषासनाय३
॥ उंज गाजासनाय३॥ उंज धनासनाय३॥ उंज सिंहासनाय३॥ ॥ उंज अथा न न्रभाद्य बलदविमलपीव
कायलीविच्चपाइकी॥ वलि॥ गुजर साहा॥ ॥ उंज अथा न न्रभाद्य बलदविमलपीमाहन्यपीविचु३॥ ॥ वलि
उंज अथा न न्रभाद्य बलदविमलपीको मा नीविचु३॥ ॥ उंज अथा न न्रभाद्य बलदविमलपीवीपूरी

बहिन

ॐ श्रीगणेशाय नमः

[illegible]

[illegible]

नेत्रं च गुरुनादवीरुक्लिभश्च त्रां कुरु ॥ यमनृकुरु त्रंदवीरुलतत्रयनागति ॥ ३ ॥
देदीप्ये समर्पयामि नमः ॥ गमसु ॥ सुधन उच्यते ॥ गमानदयकपूत्रपूगतीगममंतिर् ॥ हे गविके सुगन्धं च ग
धुर्नपुतिगुह्यतो ॥ धासिपा ॥ गमं ददादका कतगुह्यता ॥ नृनेमहा न सैदिवी न सै ॥ ४ ॥ दिसममन्तिर् ॥ मया
दिनदिनं लुक्ता गुरुनाय नमः ॥ धासिपा ॥ गमं ददादका कतगुह्यता ॥ नृनेमहा न सैदिवी न सै ॥ ४ ॥ दिसममन्तिर् ॥ मया
॥ देपुननाचमनीय समर्पयामि नमः ॥ नृनीति ॥ गुरुनाय नमः ॥ सुधन उच्यते ॥ सुधनमनुमानपावसावासा दूरा
कपादादिजनना ॥ ॥ समस्तवकुचसिर् ॥ गुरुनाय नमः ॥ नृनीति ॥ गुरुनाय नमः ॥ सुधन उच्यते ॥ सुधनमनुमानपावसावासा दूरा
॥ अक्रपा नेत्रयया ॥ ॥ सिद्धा लुक्ता कतगुह्यता ॥ नृनीति ॥ गुरुनाय नमः ॥ सुधन उच्यते ॥ सुधनमनुमानपावसावासा दूरा
निकागुह्यता ॥ नृनीति ॥ गुरुनाय नमः ॥ सुधन उच्यते ॥ सुधनमनुमानपावसावासा दूरा
यखाहा सुधीयुति ॥ गुरुनाय नमः ॥ सुधन उच्यते ॥ सुधनमनुमानपावसावासा दूरा
मर्पयामि नमः ॥ गुरुनाय नमः ॥ सुधन उच्यते ॥ सुधनमनुमानपावसावासा दूरा
रुद्धितमस्तु दुर्दितमस्तु ॥ ॥ गुरुनाय नमः ॥ सुधन उच्यते ॥ सुधनमनुमानपावसावासा दूरा

धीसमर्पयामि नमः॥ ॥ अर्घ्यं मनः अर्घ्यं समर्पयामि॥ ॥ आचमनं॥ सहस्रदलकमलहस्तावलसितचन्द्रमाभूतजल
 नेनाचमनीयमश्वपद्मजलसमर्पयामि॥ ॥ वन्दनं॥ अद्वैतविज्ञानकृपादयामनःसर्वभूमादं नासासूर्यः
 ज्ञप्साया नूनदेकाग्रनग्नद्वर्षेऽङ्गुलियातिदम्भजानिघृष्य समर्पयामि॥ ॥ दीपं॥ तक्षाग्न्यं दीपं स
 मर्पयामि॥ ॥ धूपं॥ वायुधूपं समर्पयामि॥ ॥ नमस्त्वं वागर्पं समर्पयामि॥ ॥ सूर्यं दयं समर्पयामि॥ ॥ चन्दं चतुर्ध्वं
 समर्पयामि॥ ॥ पद्मे मखलां समर्पयामि॥ ॥ अन्नन्दं नमः समर्पयामि॥ ॥ सुखकलत्रनादतश्चनीमयी घण्टा निवेद
 यामि॥ ॥ नेत्रेण॥ सुभाजसां मुखिमां सुपर्चतनेवर्षं समर्पयामि॥ ॥ मज्जान्तं कमलुलानिगुह्यावदिरसाहवभनृत्य
 नातेषु वायेत्यनाघयत्यनमस्त्वमी॥ ॥ लं पृथ्वा तत्त्वगभ्यं समर्पयामि नमः॥ कनिष्ठांगुष्ठो॥ ॥ कुं वं नमः पतत्तं प
 र्यं समर्पयामि॥ तर्जनींगुष्ठो॥ ॥ मूँ नं तज्जतत्त्वधूपं समर्पयामि मध्यमांगुष्ठो॥ ॥ मूँ पं वायुतत्त्वदीपं समर्पयामि॥ मना
 चिकारुष्ठो॥ ॥ मूँ हं नमः कामतत्त्वनेत्रं समर्पयामि नमः॥ सञ्जीवंगुष्ठो॥ ॥ मूँ नं नमः॥ मिमं तत्त्वनामूँ नमः॥